सतगुरु के संबंध में उच्चारित अव्यक्त बापदादा के अनमोल महावाक्य

28-12-1982

- मास्टर शिक्षक का पार्ट चल रहा है। लेकिन अभी सतगुरू के बच्चे बन 'गति और सद्गति' के वरदाता का पार्ट बजाना है। मास्टर सतगुरू का स्वरूप कौन सा है, जानते हो? अभी तो बाप का भी, बाप और शिक्षक का पार्ट विशेष रूप में चल रहा है इसलिए बच्चों के रूप में कभी-कभी बाप को भी नाज़ और नखरे देखने पड़ते हैं। शिक्षक के रूप में बार-बार एक ही पाठ याद कराते रहते हैं। सतगुरू के रूप में 'गति-सद्गति का सर्टीफिकेट', फाइनल वरदान सेकण्ड में मिलेगा।
- मास्टर सतगुरू का स्वरूप अर्थात् सम्पूर्ण फालो करने वाले। सतगुरू के वचन पर सदा सम्पूर्ण रीति चलने वाले – ऐसा स्वरूप अब प्रैक्टिकल में बाप का और अपना अनुभव करेंगें। सतगुरू का स्वरूप अर्थात् सम्पन्न, समान बनाकर साथ ले जाने वाले। सतगुरू के स्वरूप में मास्टर सतगुरू भी नज़र से निहाल करने वाले है। मत दी और गति हुई। इसलिए 'गुरू मंत्र' प्रसिद्ध है। सेकण्ड का मंत्र लिया और समझते हैं, गति हो गई। मंत्र अर्थात् श्रेष्ठ मत। ऐसी पावरफुल स्टेज से श्रीमत देंगे जो आत्मायें अनुभव करेंगे कि हमें गति सद्गति का ठिकाना मिल गया। ऐसी शक्तिशाली स्थिति को अब से अपनाओ।

03-10-1992

- सतगुरू द्वारा क्या भाग्य प्राप्त हुआ? पहले तो महामन्त्र मिला। सतगुरू का महामन्त्र क्या मिला? पवित्र बनो, योगी बनो। जन्मते ही यह महामन्त्र सतगुरू द्वारा प्राप्त हुआ और यही महामन्त्र सर्व प्राप्तियों की चाबी सर्व बच्चों को मिली। ''योगी जीवन, पवित्र जीवन'' ही सर्व प्राप्तियों का आधार है। इसलिए यह चाबी है। अगर पवित्रता नहीं, योगी जीवन नहीं तो अधिकारी होते हुए भी अधिकार की अनुभूति नहीं कर सकेंगे। इसलिए यह महामन्त्र सर्व खज़ानों के अनुभूति की चाबी है। ऐसी चाबी का महामन्त्र सतगुरू द्वारा सभी को श्रेष्ठ भाग्य में

मिला है और साथ-साथ सतगुरू द्वारा वरदान प्राप्त हुए हैं। वरदानों की लिस्ट तो बहुत लम्बी है ना! कितने वरदान मिले हैं? इतने वरदानों का भाग्य प्राप्त है जो वरदानों से ही सारी ब्राह्मण जीवन बिता रहे हो और बिता सकते हो। कितने वरदान हैं, लिस्ट का मालूम है? तो वर्सा भी है, पढ़ाई भी है, महामन्त्र की चाबी और वरदानों की खान भी है। तो कितने भाग्यवान हो! या छिपा कर रखा है, आगे चल अन्त में खोलेंगे? बहुतकाल से भाग्य की अनुभूति करने वाले अन्त में भी पद्मापद्म भाग्यवान प्रत्यक्ष होंगे। अब नहीं तो अन्त में भी नहीं। अभी है तो अन्त में भी है। ऐसे कभी नहीं सोचना कि सम्पूर्ण तो अन्त में बनना है। सम्पूर्णता की जीवन का अनुभव अभी से आरम्भ होगा तब अन्त में प्रत्यक्ष रूप में आयेंगे। अभी स्वयं को अनुभव हो, औरों को अनुभव हो, जो समीप सम्पर्क में आये हैं उन्हों को अनुभव हो और अन्त में विश्व में प्रत्यक्ष होगा। समझा?

04-01-1982

- ‘‘सतगुरू का प्रथम वरदान – ‘‘मन्मनाभव’’’’ ।

30-11-2011

- सतगुरू द्वारा गुरू की श्रीमत मिलती है। कितनी श्रेष्ठ मत मिली है? तो अपने को चेक करो कि सदा श्रीमत पर चलते हैं वा कभी मनमत परमत की तरफ तो नहीं बुद्धि जाती? चेक किया? जो समझते हैं सतगुरू द्वारा सदा ही श्रीमत श्रेष्ठ मत पर चलने वाले हैं, मनमत परमत पर कभी भी स्वप्न में भी नहीं जाते, वह हाथ उठाओ, जो सदा श्रीमत पर ही चलते हैं, परमत मनमत नहीं? हाथ उठाओ।

15-12-2003

- सतगुरू द्वारा श्रीमत, जिस श्रीमत का गायन आज भी भक्ति में हो रहा है। आप निश्चय से कहते हो हमारा हर कदम किसके आधार से चलता है? श्रीमत के आधार से हर कदम चलता है। तो

चेक करो – हर कदम श्रीमत पर चलता है? भाग्य तो प्राप्त है लेकिन भाग्य के प्राप्ति का जीवन में अनुभव है? हर कदम श्रीमत पर है वा कभी-कभी मनमत या परमत तो नहीं मिक्स होती? इसकी परख है – अगर कदम श्रीमत पर है तो हर कदम में पदमों की कमाई जमा का अनुभव होगा। कदम श्रीमत पर है तो सहज सफलता है। साथ-साथ सतगुरू द्वारा वरदानों की खान प्राप्त है। वरदान है उसकी पहचान – जहाँ वरदान होगा वहाँ मेहनत नहीं होगी। तो सतगुरू के सम्बन्ध में श्रेष्ठ मत और सदा वरदान की प्राप्ति है। और विशेषता सहज मार्ग की है, जब एक में तीन सम्बन्ध हैं तो एक को याद करना सहज है।

25-01-1979

- सतगुरू के सम्बन्ध में रिगार्ड रखना – अर्थात् सतगुरू की आज्ञा देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध भूलकर देही स्वरूप अर्थात् सतगुरू के समान निराकारी स्थिति में स्थिति रहना। सदा वापस घर जाने के लिए एवररेडी रहना।
- आजकल के अल्पकाल के चमत्कार दिखाने वाले अर्थात् बाप से वंचित करने वाले यथार्थ से दूर करने वाले नामधारी महान आत्मायें उन्हों के लिए भी सतवचन महाराज कहते हैं। तो सतगुरू जो महान आत्माओं का भी रचता परमपिता है उसकी सत्य नॉलेज में क्वेश्चन करना वा संकल्प उठाना यह भी रायल रूप का संशय अर्थात् डिसरिगार्ड है। एक क्वेश्चन होता है स्पष्ट करने के लिए – दूसरा क्वेश्चन होता है सूक्ष्म संशय के आधार से – इसको कहा जाता है डिसरिगार्ड

31-03-1995

- वरदानों की लिस्ट देखो कितनी लम्बी है! रोज वरदान मिलता है ना! कितने समय से मिल रहे हैं! इतने वरदान कोई भी फॉलोअर को कोई गुरू दे ही नहीं सकते। ऐसा सतगुरू जो रोज वरदान दे, ऐसा देखा? अभी नशा है ना! (हाँ जी) बहुत अच्छा। सदा रखना। ऐसे नहीं, यहाँ से बस में जाओ तो नशा उतरना शुरू हो जाये। सदा बढ़ता रहे।

30-03-1998

- सतगुरू द्वारा श्रीमत ऐसी मिलती है जो सदा के लिए क्या करूं, कैसे चलूं, ऐसे करूं या नहीं करूं, क्या होगा..... यह सब क्वेश्चन्स समाप्त हो जाते हैं। क्या करूं, कैसे करूं, ऐसे करूं या वैसे करूं... इन सब क्वेश्चन्स का एक शब्द में जवाब है – फॉलो फादर। साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को फॉलो करो, निराकारी स्थिति में अशरीरी बनने में शिव बाप को फॉलो करो। दोनों बाप और दादा को फॉलो करना अर्थात् क्वेश्चन मार्क समाप्त होना वा श्रीमत पर चलना। यह मुश्किल है? पूछने की आवश्यकता पड़ती है क्या? कॉपी करना है, अपना दिमाग नहीं चलाना है। बाप समान बनना अर्थात् फॉलो फादर करना।

08-04-1992

- आप पुरूषार्थ में स्ट्रिक्ट नहीं होते हो तो बाप को स्ट्रिक्ट होना ही पड़ेगा। अभी तो बाप के प्यार स्वरूप से चल रहे हो, पल रहे हो। लेकिन सतगुरू का रूप धर्मराज नहीं । सतगुरू की आज्ञा सिर माथे गाया हुआ है। अभी तो बापदादा मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे कह करके चला रहे हैं। सतगुरू की कोई ने आज्ञा नहीं मानी तो सतगुरू है ना। बाप के आगे तो बच्चों के नाज़, लाड-कोड़ चलते हैं।

26-12-1979

- सतगुरू की कृपा से मालामाल स्थिति:- जैसे भक्ति मर्ग में गुरू कृपा गाई हुई है, तो ज्ञान-मार्ग में सतगुरू की कृपा है – पढ़ाई। पढ़ाई की कृपा से सतगुरू मालामाल बना देते हैं। जिस्के ऊपर सतगुरू की कृपा हो गई, वह सदा मुक्त और जीवनमुक्त बन गया।''

26-12-1984

- आज सतगुरूवार के दिन बापदादा सभी को सदा सफलता स्वरूप रहो, सदा हिम्मत हुल्लास में रहो, सदा बाप की छत्रछाया के अन्दर सेफ रहो, सदा एक बल एक भरोसे में स्थित रह

साक्षी हो सब दृश्य देखते हुए हर्षित रहो, ऐसे विशेष स्नेह भरे वरदान दे रहे हैं। इन्हीं वरदानों को सदा स्मृति में रखते हुए समर्थ रहो, सदा याद रहे और सदा याद में रहो। अच्छा – सभी को गुडमार्निंग और सदा हर दिन की बधाई। अच्छा –

03-12-1979

- बाप से वर्सा मिला, टीचर के सम्बन्ध से पढ़ाई मिली और सतगुरू के सम्बन्घ से घर का रास्ता मिला और साथ चलेंगे।

21-12-1989

- सतगुरू हर कदम में वरदानों से चला रहा है। हर कर्म में श्रेष्ठ मत – वरदाता का वरदान है। जो हर कदम श्रेष्ठ मत से चलते हैं उसको हर कदम में कर्म की सफलता का वरदान सहज, स्वत: और अवश्य प्राप्त होता है। सतगुरू की मत श्रेष्ठ गति को प्राप्त कराती है। गति-सद्गति को प्राप्त कराती है। श्रेष्ठ मत और श्रेष्ठ गति। अपने स्वीट होम अर्थात् गति और स्वीट राज्य अर्थात् सद्गति – इसको तो प्राप्त करते ही हो लेकिन ब्राह्मण आत्माओं को और विशेष गति प्राप्त होती है। वह है इस समय भी श्रेष्ठ मत के श्रेष्ठ कर्म का प्रत्यक्षफल अर्थात् सफलता।

21-06-1974

- तीनों सम्बन्ध निभाने वाले त्रिमूर्ति स्नेही आत्मायें तीन बातों से सम्पन्न होंगी। बाप के सम्बन्ध से उनमें क्या विशेषता होगी?-फरमानबरदार। शिक्षक के रूप से क्या होगी? शिक्षा में वफादार और ईमानदार चाहिये। सतगुरू के सम्बन्ध में आज्ञाकारी।

26-12-1979

- सतगुरू की कृपा से मालामाल स्थिति:- जैसे भक्ति मर्ग में गुरू कृपा गाई हुई है, तो ज्ञान-मार्ग में सतगुरू की कृपा है – पढ़ाई। पढ़ाई की कृपा से सतगुरू मालामाल बना देते हैं। जिस्के ऊपर सतगुरू की कृपा हो गई, वह सदा मुक्त और जीवनमुक्त बन गया।''

28-03-2006

- होमवर्क दिया है ना? कौन होमवर्क देता है? टीचर। लास्ट में है सतगुरू का पार्ट। सतगुरू का पार्ट चलेगा तो समाप्ति हो जायेगी। इसके लिए सबको तैयार कर रहे हैं।

31-01-1998

- सतगुरू के रूप में हर कार्य के लिए श्रीमत भी देते और साथ भी देते हैं। सिर्फ मत नहीं देते हैं, साथ भी देते हैं।

15-12-2006

- एक है परमात्म पालना के भाग्य की रेखा। दूसरी है श्रेष्ठ शिक्षक द्वारा शिक्षा के भाग्य की रेखा। तीसरी है सतगुरू द्वारा श्रीमत के भाग्य की रेखा।

28-03-2002

- स्वयं सतगुरू अमृतवेले से रात तक हर कर्म की श्रेष्ठ मत दे कर्म बन्धन के परिवर्तन में, कर्म सम्बन्ध में आने की श्रीमत देने के निमित्त बनायेंगे – यह भी स्वप्न में नहीं था। लेकिन अभी अनुभव से कहते हो हमारा हर कर्म श्रीमत पर चल रहा है। ऐसा अनुभव है?

01-01-1986

- नये वर्ष में सदा हर प्रतिज्ञा को प्रत्यक्ष रूप में लाने का अर्थात् हर कदम में फालो फादर करने का विशेष स्मृति स्वरूप का तिलक सतगुरू सभी आज्ञाकारी बच्चों को दे रहे हैं।

18-02-1993

- आज त्रिमूर्ति शिव बाप सर्व बच्चों को विशेष त्रि-सम्बन्ध से देख रहे हैं। सबसे पहला प्यारा सम्बन्ध है-सर्व प्राप्तियों के मालिक वारिस हो, वारिस के साथ ईश्वरीय विद्यार्थी हो, साथ-साथ हर कदम में फॉलो करने वाले सतगुरू के प्यारे हो।

28-11-1981

- अभी लाडले बच्चे बने हो, इसमें तो ठीक, बच्चे और बाप के साथ लाडकोड में, सम्बन्ध निभाने में ठीक हो लेकिन अब मास्टर शिक्षक बनकर, मास्टर सतगुरू बनकर स्टेज पर आओ। अभी यह दो पार्ट रहे हुए हैं। समझा – अच्छा

19-12-1985

- फॉलो ब्रह्मा, साकार रूप फादर वा फॉलो आकार रूप ब्रह्मा फादर। चाहे ब्रह्मा बाप को फॉलो करो चाहे शिव बाप को फॉलो करो। लेकिन शब्द वही है – 'फॉलो फादर'। इसलिए ब्रह्मा की महिमा ''ब्रह्मा वन्दे जगतगुरू'' कहते हैं। क्योंकि फॉलो करने के लिए साकार रूप में ब्रह्मा ही साकार जगत के लिए निमित्त बने। आप सभी भी अपने को शिवकुमार शिवकुमारी नहीं कहलाते हो। ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाते हो। साकार रचना के निमित्त साकार श्रेष्ठ जीवन का सेम्पल 'ब्रह्मा' ही बनता है। इसलिए सतगुरू शिव बाप को कहते, गुरू सिखलाने वाले को भी कहते हैं। जगत के आगे सिखलाने वाले 'ब्रह्मा' ही निमित्त बनते हैं। तो हर कर्म में फॉलो करना है। ब्रह्मा को इस हिसाब से जगतगुरू कहते हैं। इसलिए जगत ब्रह्मा की वन्दना करता हैं।

09-01-1980

- जो भी हद के गुरू होते हैं उनका एक गद्दी नशीन शिष्य अपने गुरू का नाम बाला करता हैं और यहाँ सतगुरू के इतने सब तख्त नशीन बच्चे हो – एक-एक बच्चा कितना श्रेष्ठ कार्य कर सकते हैं! ।

07-05-1983

- सतगुरू की कृपा आपका वर्सा बन गया। इसलिए कृपा करो, यह संकल्प करने की भी आवश्यकता नहीं

05-04-1983

- बाप रूप से विशेष अधिकार है – मिलन की विशेष ‘टोली’। और शिक्षक के रूप में ‘मुरली’। सतगुरू के रूप में ‘नजर से निहाल’। अर्थात् अव्यक्त मिलन की रूहानी स्नेह की दृष्टि।

03-05-1972

- अभी रहमदिल का पार्ट भी समाप्त हुआ। बाप के सम्बन्ध से बच्चों का अलबेलापन वा नाज सभी देखते हुए आगे बढ़ाया, लेकिन अब किसी भी प्रकार से पावन बनाकर साथ ले जाने का पार्ट है सद्गुरू के रूप में। जैसे बाप बच्चों के नाज वा अलबेलापन देख फिर भी प्यार से समझाते चलाते रहते हैं। वह रूप सद्गुरू का नहीं होता। सतगुरू का रूप जैसे सद्गुरू है-वैसे सत संकल्प, सत बोल, सत कर्म बनाने वाला है। फिर चाहे नॉलेज द्वारा वा पुरूषार्थ द्वारा बनावे, चाहे फिर सजा द्वारा बनावे। सद्गुरू नाज और अलबेलापन देखने वाला नहीं है। इसलिए अब समय और बाप के रूप को जानो। ऐसे न हो –– बाप के इस अन्तिम स्वरूप को न जानते हुए अपने बचपन के अलबेलेपन में आकर अपने आपको धोखा दे बैठो। इसलिए बहुत सावधान रहना है।